IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 03, 2022

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी विमर्श

RAMDATTI HULLASHGIRI M.

(M.A., B.ED, GSET)

हिन्दी साहित्य में नारो-विमर्श एक ऐसी चर्चित सकल्पना रही है, जो नारी जीवन एवं अस्तित्व को लेकर अनेक सवाल बहल करती है। आधुनिक सदर्भ में नारा विमर्श का मतलब है रवी जीवन के विषत के इर्द-गिर्द होता ऐसा विचार विनिमय जिसके द्वारा मान्यता, व्याख्या या तथ्य को भाषा के माध्यम से साहित्य में प्रतिबिंबित करना। सन् १९७६ मे युराप में अतरराष्ट्रीय महिला वर्ष मनाया गया, जिसमे स्वी विमर्श की बात सबसे पहले सामने आई। १९८० के बाद यह भारत की जमीन पर आया। यह आया जरूप परिचय से है, परन्तु भारत में उसने अपना नया भारतीय रूप धारण कर लिया है। भारतीय नारी-विमर्श में नारी को वस्तु के रूप में नहीं, अपितु मनुष्य के रूप में देखने की बात पर जोर दिया गया है। नारी को भी पुरुष को तरह सुख-दुःख, मान-अपमान सबका अनुभव होता है। आधुनिक युग में अनेक पुरुष लेखकों के साथ महिला लेखिकाओं ने भी स्वी-जीवन की व्यचा कथा को अपने साहित्य में व्यापकता से चित्रित किया है।

आधुनिक उपन्यास साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान महत्वपूर्ण है। रचनाओं में ताजगी और उष्मा से पाठको का ध्यान बरबस आकृष्ट करने वाली मैत्रेयी पुष्पा ग्रामीण परिवेश को लेकर आयी है। उन्होंने बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक से लेकर आज तक समकालीन सटभी में नारी की स्थिति और गति को अभिव्यक्ति टी है। "मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी लेखिका है जिन्होंने प्रमचट के समान अपने समय और समाज को ईमानदारी से अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है।" उनके उपन्यासो में स्मृतिदश, बेतवा बहती रही, इटन्नमम् चाक झूलानट, अल्मा कबूतरी, विजन, कही ईसुरो फाग, त्रिया हठ आदि चर्चित है।

साहित्य के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा का प्रवेश 'स्मृतिटश' नामक उपन्यास से होता है। इस उपन्यास में लेखिका ने परम्परागत समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचार का अकन किया है।" बेतवा बहती रही में बेतवा के कछारो क्षेत्र में साधारण स्त्री के उत्पीडवन और यातना के सदनों को उद्घाटित करता है। इस उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने उर्वशी के दुःख, उसकी पीडा जो ग्रामीण कन्या की व्यथा हो सकती है, के यातनामयी नाटकीय जीवन का यथार्थ चित्र को उद्घाटित किया है। हर तरफ से उसे सुरक्षित रखने वाला कवच टूट गया है। पति की मृत्यु के बाद अचित ने जान बूझकर अत्यधिक उम्र वाले मीरा के पति के साथ उर्वशी का विवाह किया। "अशिक्षा, रूढिडयो और अधविश्वासो वाले समाज में उर्वशी और मीरा

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

अपनी यातना में अकेली नहीं है। मैत्रेयी पुष्या गहर अवसाद के साथ इसे अनुभव करती है कि सहना और जूझना ही भारतीय समाज में जैसे स्त्री नियति है।"

इदन्नमम में लेखिका ने बुदेलखडी जीवन के सामाजिक यथार्थ तथा गहरा मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है। "इदन्नमम की मदाकिनी वास्तविक अर्थों में जुझारू युवती है, जो केवल परिवार और समाज द्वारा स्वी के निर्मित बधनों को नहीं तोडहती वरन् उस शोषण के विरूद्ध तनकर खडडो होती है जो आज के नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियो ओर गामीणो पर कहर के रूप में बरसा जा बहा है। मदाकिनी की माँ और उसकी भाभी कुसुम की व्यथा नारोरों की परम्परागत नियति है, जो पर्याप्त सवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत की गयी है।""

'विजन' मे लेखिका ने दो प्रकार की नारियो का चित्रण किया है। व्यवस्था के चक्रव्यूह में फसी नारी और व्यवस्था के विरोध में विद्रोहिणी नारां डी। आभा विद्रोहिणी नारो है और इसलिए उन्होंने पति को अनुगामिनी नहीं सहगामिनी बनना पसंद किया। इसी कारण उसका पति उसे छोडठकर चला गया। परस्तु आभा स्वाभिमानी और विद्रोहिणी है जो अपने पति को ही तलाक के लिए पत्र भेजती है। वह बलात्कारित खो सरोज की सहायता करती है तो दूसरों तरफ अनैतिक और पारवडी पुरुषों से प्रतिशोध लेने के लिए विद्रोह भी करती है।

समाज में परिवर्तन आया है और परिवर्तन के इस दौर पर श्ती भी आगे बढ़ती है। परन्तु आज

उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी वी पुरुष के वचस्व में दबी नारो अवसर से वचित है। डौनेहा मानसिक साय से विद्रोही है, किन्तु व्यवहारिक रूप से समझोता करने वाली है। अत वह व्यवस्था के चात्यूह में पूरी फसी है। उसके पास है प्रतिष्ठित कॉलेज से डॉक्टर बन जाने का शिष्ट अहंकार मैडल और पदको की जी साथ ही योग्यता और प्रतिभा। फिर भी ससुर और पति दोनों में उसके केरियर पर बलात्कार हुआ है। अपने ही ससुर के अस्पताल में थीं। नेहा को जब अपनी योग्यता की जान बूझकर उपेक्षा दिलाई देती है तब यह अधिक व्यथित होती है। एक कुशल डॉक्टर होते हुए भी नेहा को उसके ससुर ने जान बूझकर हाथ नहीं लगाने दिया इस डर से कि कही बेटे से ज्यादा बहू निपुण न बन जाए। यही नहीं, केत्र चिकित्सा के समय गलत एजेक्शन दिए जाने से मरोज के अवस्थ होने पर दो बाहर के डॉक्टर बुलाए जाते है पर नेहा को उसके योग्य भी माना जाता। किन्तु मरोज की मौत होने पर उसके ससुर वहा से निकल जाते है और पति ही। अजय मदद के लिए पत्नी डॉ। नेहा के सामने गिहवगिडवाता है। इसलिए कि ही। नेहा इस मौत की जिम्मेदारी स्वय पर ले और अपने बीत्व का उपयोग कर 'शरण आई सेटर' को बदनामी से बचा लेती है। अचना और उपेक्षा की शिकार बनी नेहा का विदांड ठण्डा पड जाता है। वह इस

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 03, 2022

अधेरो व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलंद करते अर्थात सघर्ष करने का संदेश देती है कि 'अधेरा में से धीर से मत निकलों, अधेरों के खिलाफ गुस्सेवर आवाज उठाओ।' किन्तु अजय की बात से समझोता करते हुए ही इस समझोते और अतईन्द्र से पीडिठत दी। नेहा अपना मानीसक सतुलन खो जाने के कारण व्यर्थ बडबडढाने लगती है। डर के मार नर्स डॉ। अजय की ओर भागती है और कहती है "सर, डॉ। नेहा को कुछ हो गया है, ही। नेहा। शी इज सिक ।""

कजर, सासी, नट, मदारी, सपेर, हाबुडेढ, बनजार, बावरिया, कबूतरों न जाने कितनी जन-जातियां है, जो सभ्य समाज के हाशियों पर डेरा लगाए सदिया गुजार देती है। हमारा उनसे चौकन्ना सम्बन्ध सिर्फ काम चलाऊ ही बना है। रोजी के गजटो, गवटियरी में अनेक नाम है। अपराधी कवीले या सरकश जन-जातिया । ऐसी ही एक जन जाति की महिला है, अल्पा कबूतरी। मैत्रेयी पुष्पा ने उसके कठिन जीवन संघर्ष को बहुत ही सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है। अल्मा कबूतरों उपन्यास का प्रारम्भ कदमबाई कबूतरों से होता है। समाज के उच्च माने जाने वाले कला जाती के लोग कबूतरों जांति की स्त्री के साथ अवैध सम्बन्ध रखते है। मसाराम जिसके पास घर, खेती और अपनी सतान होते हुए भी कदमबाई के साथ जातीय सम्बन्ध रखते है, जिससे राणा का जन्म होता है, जो न कबूतरा जाति का है, न कज्जा समाज का। उसकी मा कदमबाई उसे अपने कबीले से दूर कज्जा और पुलिस के साथ सुसम्बन्ध रखने वाले रामसिंह के पास पढ़ढ़ने भेजती है, वही उसकी बेटी आत्मा का प्रवेश होता है और अंत तक कथा का मुख्य पात्र या नायिका बन जाती है।

अल्गा और राणा के बीच रागात्मक सम्बन्ध बनता है परन्तु रोमाश की यह दुनिया अल्पजीवी है अत्मा बुदेलखंड के गढ़ी राजरमत की शिकार होती है। राणा की पिटाई होती है, वह अर्धपागल हो जाता है और दूसरी तरफ अल्मा का राजकीय हथियार की तरह उपयोग होता है। खूरबार नेता सूरजभान उसका अपहरण कराकर बाध रखते है। अल्मा का दोष इतना ही है कि वह इतनी सुंदर है कि किसी पोलीस अधिकारों को या किसी नेता के सामने भेट के रूप में रख सके। दूसरा दोष यह भी वह अपन पिता के पास अच्छा पढ़ढो लिखी है।

सदरता स्त्री की लाचारों है, परवशता है और पीडढा का कारण भी है। अल्मा के लिए भी उसकी सुंदरता ही वेदना का कारण बनती है। बधन में रहने वाली अल्मा, उसकी रखवाली के लिए नेताजी द्वारा रखे गए एक सुशिक्षित पस्तु येकार धीरज, जो स्वय भो अल्मा की तरफ आकर्षित है, उसकी सहायता से भाग जाती है। परन्तु पहाडठ जैसा प्रश्न उसके सामने है कि इतना अच्छा रूप लेकर जाये कहा। उसे निरावरण देह के साथ डाकू परन्तु चुनाव में विजेता रोराम शास्त्री के पास पेश किया जाता है अल्मा मोहिनी बनकर मन ही मन अपने प्रेमी राणा को याद कर रोराम शास्त्री को सतुष्ट करती है। अल्मा का

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 03, 2022

अब महत्वपूर्ण स्थान बनता है क्योकि पढ़हो लिखी होने के कारण रोराम शास्त्री के लिए वह भाषण मी तैयार करती है। अल्मा के कारण हो उसे शासन में रूचि जायत होती है।

अल्मा के चरित्र द्वारा लेखिका ने इस तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है कि स्त्री का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। जैसे वह पुरूष के हाथ का खिलौना है, वह जैसे चाहे वैसा व्यवहार उसके साथ करने के लिए स्वतंत्र है। इसी कारण उसके हाथ पर खुतराया हुआ 'अल्मा कबूतरों' के स्थान पर रोराम शाखी 'अल्मा शास्त्री' सुतराता है। "भारत की ६३ वर्षों की आजादी ने भी इनकी नयी पीढडो को सम्मान पूर्ण जीवन का कोई विकल्प नहीं दिया, जीविकोपार्जन कोई सम्मानसाथ उपाय त होने के कारण किया देह व्यापार के लिए विवश है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कार्य को गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। चाक में "जाट समाज में नैतिक सहिताओं की सवय में जकड़ों पुरानी पीढ़तों के कुरता भर हड का और नारो सहिता का उल्लपन करने वाली हवी से जीने का अधिकार छीन लेना एक बहुत मामूली बात का विाष्ण किया गया है। इस समाज में किसी रवी की हत्या कर दिए जाने पर भी एक हल्की सी सुगबुगाहट के अतिरिक्त कोई विशेष हलचल नहीं होती, इसके प्रतिराध में कोई सदा नहीं होता। इस दूर परिवस में मंत्री पृथ्या ने नारों नियति का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसमे चौकाने वाली ताजगी है। इस समाज में न केवल पिछडढों जाति की स्वी, वरन् दलित समाज की स्त्री भी प्रेम करने के अधिकार से प्रथित है। इस अपराध के लिए यदि रशम की हत्या की जाती है, तो गुलबन्दी भी जिन्दा जला दी जाती है। कोई पुरुष इस अमानवीय कृत्य के विरोध में लहवा होने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। इसके विरोध में लड़वां होती हे सारग, जो पहुत पढदो लिखी तो नहीं है, या जिसमे सकल्प की गजब की दृढदता है और जिसके सकल्प को शान देता है रोधर प्रजापति । रोघर प्रजापति अपने आदर्श और प्रेम के चाक पर सारग का नया चरित्र घड़ढ़ता है। सारग में अन्याय से लडदने, आततायियों का मुकाबला करने, नारी अधिकारी के लिए जान दे देने तक की हिम्मत और दृढवता है। इसके साथ ही उसमें गहरों सवेदनशीलता विवेक और संगठन क्षमता भी है। पर यह सब उसमे कच्चे उपादान की तरह है। रोधर इस कच्चे उपादान को सही रूप देने के लिए कथकार का काम करता है और सारग नारी सहिता की समस्त मान्यताओ को चुनौती देती हुई, न केवल रोघर से देह सम्बन्ध स्थापित करती है, बल्कि पुरुष सत्ता को चुनौती देने के लिए ग्राम पंचायत के चुनाव में प्रधान पद के लिए, किडडो भी हो जाती है। पति से लेकर गाव का सारा पुरुष समाज उसका विरोध करता है, पर वह अपने खुद के निर्मित नारी सगठन के बल पर पुरूष सत्ता को चुनौती देने का साहस भरा कदम उठाती है। उससे यह विचार उभरता है कि जब तक सत्ता स्त्री के हाथ

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

में नहीं आती, पुरूष समाज द्वारा उसका शोषण और उस पर होने वाल अत्याचार समाप्त नहीं हो सकता।""

झूलानट का विषय भी जाट समाज की एक पारिवारिक स्थिति है। "सास-बहू के चित्रण के सम्बन्यो के चित्रण के साथ-साथ शीलो के रूप में एक जाट युवती के परम्परागत मूल्यों को चुनौती देने, स्वी सहिता को नकारने और विद्रोह की मुद्रा में तन कर लडढ़ होने का चित्रण भी किया गया है। शीलों में सारंग की ही तरह अद्भुत जिजीविषा, अपना भाग्य स्वय लिखने का संकल्प और समाज से अकेले ही लोहा लेने की क्षमता है। पर उसमे नारो शक्ति का कोई भी स्वर रूप नहीं लक्षित होता।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उफ्यासों में युगों से पीडिवत और प्रताडिवत नारो की मुक्ति की कामना अभिव्यक्त की है। उन्होंने नारो जीवन को विषमता पूर्ण एव शोषण से मुक्ति दिलाने के अतिरिक्त नारों के स्वतत्र अस्तित्व की स्थापना करने का आहवान किया है। कुल मिलाकर मैत्रेयी पुष्पा ने नारो विमर्श की जागरूकता का संदेश देते हुए सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों के बीच भटकती नारो की व्यथा-कथा को प्रस्तुत किया है।

सदर्भ

आधुनिक हिन्दी कालजयी साहित्य, सपा, अर्जुन चौहाण, ए। २२ (९)

(२) हिदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, ५। ३८१

(३) हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरश, । २२८

(४) हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, ५। ३८७

विजन, मैत्रेयी पुष्पा, पु। २१२

(६) हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, ५। ३८९

(७) हिटी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, पृ। ३८८

(८) हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, ५। ३८८